पत्र लेखन - अनौपचारिक पत्र

छोटे भाई को योग एवं प्राणायाम करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए।

बी-15, नानकपुरा रोड़,

नई दिल्ली।

दिनांक : ....

प्रिय कमल,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुमसे बात करना चाह रहा था। परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं कर पाया। कल पिताजी का पत्र आया था। उनसे पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। तुम पढ़ाई करने में इतना समय व्यतीत करते हो कि अपने स्वास्थ्य की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता। देर तक जागना और समय पर भोजन नहीं करना, अच्छी बात नहीं है। ऐसा करने से तुम्हारे शरीर का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। इस तरह स्वास्थ्य की अवहेलना करना ठीक नहीं है। तुम्हें जहाँ समय पर सोना और भोजन करना चाहिए, वहीं तुम्हें थोड़ा-सा समय योग एवं प्राणायाम के लिए भी निकालना चाहिए। ऐसा करने से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग एक गुणकारी औषधि के समान कार्य करता है।

प्रात:काल उठकर थोड़ा-सा समय योग व प्राणायाम का अभ्यास करो। इससे रक्त का संचारण सुचारू रूप से होगा, जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी, माँसपेशियों को मज़बूती मिलेगी और तुम सदैव प्रसन्नचीत व स्वास्थ्य रहोगे। मेरी इस सलाह को मानकर नियमित रूप से योग व व्यायाम करो। तुम्हें ज़रूर लाभ मिलेगा।

तुम्हारा भाई

वीरेन्द्र

धूम्रपान करने वाले भाई को इसके दोषों का उल्लेख करते हुए पत्र लिखिए।

410, ए-ब्लाक,

मोती बाग,

नई दिल्ली

दिनांक: ....

प्रिय अजीत,

स्नेह!

बहुत दिनों से तुमसे सम्पर्क न होने के कारण तुम्हें पत्र लिख रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरी मुलाकात तुम्हारे करीबी मित्र से हुई। उसके द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि तुमने धूम्रपान करना आरम्भ कर दिया है। यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ।

तुम एक बुद्धिमान व समझदार विद्यार्थी हो। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि धूम्रपान करने से बहुत तरह की बीमारियों का खतरा हो सकता है। धूम्रपान करने से व्यक्ति के फेफड़ों में संक्रमण का खतरा बना रहता है। जिससे तपेदिक (टी.बी) व दमा जैसी बीमारियाँ शरीर में घर बना लेती हैं। आरंभ में तुम्हें इसके दुष्परिणाम नजर नहीं आएगें। परन्तु धीरे-धीरे यह तुम्हारे शरीर व जीवन को खोखला बना देगा। तुम्हारे इस कार्य से माता-पिता को भी बड़ा दुख होगा। अत: तुम्हें चाहिए कि तुम इस व्यसन को छोड़ दो। इस व्यसन को छोड़ने के लिए सुबह उठकर व्यायाम व योगा करो, संयम से काम लो तभी तुम स्वयं का हित कर पाओगे।

योगा तुम्हारा मनोबल बढ़ाएगा तथा व्यायाम से तुम स्वयं को तरोताज़ा महसूस करोगे। व्यायाम व योगा करने से धूम्रपान का दुष्प्रभाव भी कम हो जाता है। सही समय पर उठाया गया कदम जीवन को नई दिशा देता है। मैं आशा करता हूँ कि तुम अपने बड़े भाई की बात मानते हुए दुबारा धूम्रमान नहीं करोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई,

लक्ष्मण

विद्यालय के वार्षिक उत्सव में माताजी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन

अ.ब.स

दिनांक: ....

पूज्य माताजी,

सादर प्रणाम!

आज ही आपका पत्र मिला। घर का हालचाल मालूम हुआ। यह जानकर अच्छा लगा कि घर में सभी कुशल हैं। आगे समाचार यह है कि मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। अभी मेरी परीक्षाएँ चल रही थी। इसलिए मैं पढ़ाई में व्यस्त थी और आपको पत्र नहीं लिख सकी। अब हमारे यहाँ वार्षिकोत्सव की तैयारी आरंभ हो गई है।

जैसा कि आपको पता है, हर साल की तरह इस साल भी वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस वर्ष का वार्षिकोत्सव मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस बार मैं भी इसमें भाग ले रही हूँ और साथ ही वार्षिकोत्सव में मुझे 'सर्वश्रेष्ठ वक्ता' का भी पुरस्कार मिलेगा। अत: मैं चाहती हूँ कि इस शुभ अवसर पर आप आएँ और मेरा हौसला बढ़ाएँ। आशा तो यह थी कि पिताजी भी आपके साथ आते परन्तु उन्होंने अपनी असमर्थता पहले ही बता दी है। अत: आप ज़रूर आइएगा।

विद्यार्थियों के परिवारजनों के लिए यहाँ रहने की भी उचित व्यवस्था की गई है। आपको कोई कठिनाई नहीं होगी। आप आएँगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा और मेरी हिम्मत बढ़ेगी। पिताजी को मेरा प्रणाम कहिएगा। पत्र में अपने आने की तिथि ज़रूर लिखिएगा। आपके पत्र की प्रतिक्षा रहेगी।

आपकी पुत्री,

रचना

फैशन में समय और धन का अपव्यय करने वाली छोटी बहन को प्रेरणाप्रद पत्र लिखिए।

सी-40, मथुरा रोड,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय बहन मृणाल,

बहुत प्यार!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखना चाह रही थी परन्तु व्यस्तता के कारण नहीं लिख पाई। आशा करती हूँ तुम वहां भली प्रकार से होगी। कल माताजी से मेरी बात हुई। उनके द्वारा मुझे यह ज्ञात हुआ कि तुम अपनी शिक्षा के प्रति बहुत ही लापरवाह हो गई हो। तुम नियमित रूप से विद्यालय भी नहीं जाती हो और अपनी पढ़ाई में भी ध्यान नहीं दे रही हो। तुम्हारा अधिकतर समय फैशन करने, उससे जुड़े कार्यक्रमों और पुस्तकें पढ़ने में ही व्यतीत हो जाता है। तुम्हारे इस व्यवहार से माता-पिताजी बड़े परेशान है।

मृणाल विद्यार्थी जीवन पढ़ने-लिखने के लिए होता है। यही समय होता है, जब हम अपने भविष्य की नींव रखते हैं। तुम अपना बहुमूल्य समय पढ़ने-लिखने के स्थान पर फैशन में व व्यर्थ के क्रियाकलापों में लगा रही हो, यह सही नहीं है। यदि तुम इसी तरह पढ़ाई-लिखाई छोड़कर फैशन के नाम पर समय नष्ट करती रहोगी, तो दिशा भटक जाओगी और अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ कर बैठोगी। पिताजी को हमसे बहुत आशाएँ हैं। हमारी शिक्षा में कोई बाधा ना आए, इसके लिए वह दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं। इस तरह के व्यवहार से तुम उनके परिश्रम व आशाओं में पानी फ़ेर रही हो।

आशा करती हूँ कि तुम मेरे इस पत्र को गंभीरता से लोगी और अपना ध्यान अपनी पढ़ाई में लगाओगी।

तुम्हारी बड़ी बहन

सुषमा

बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ जाने वाले समूह में जाने की अनुमति माँगने हेतु पिताजी को पत्र लिखिए।

45/6, सेवा नगर,
नई दिल्ली।

आदरणीय पिताजी,
सादर प्रणाम!

मैं यहाँ कुशलमंगल हूँ। आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ कुशलमंगल होगें। पिताजी, आज पत्र लिखने का विशेष कारण है। उड़ीसा में बाढ़ के कारण लोगों के बहुत बुरे हाल हैं। चारों तरफ़ हाहाकार मचा हुआ है। बाढ़ के कारण बहुत से लोग फँसे हुए हैं। सरकार द्वारा उन लोगों तक सहायता पहुँचाना कठिन हो रहा है। सरकार ने सेना को भी इस कार्य में लगा दिया है परन्तु बाढ़ का कहर इतने व्यापक तौर पर है कि सेना को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

इस कठिन घड़ी में देश के हर कोने से उड़ीसा के लोगों की सहायता करने का प्रयास किया जा रहा है। कई स्वयं-सेवी संस्थाओं ने विद्यालयों से साहसी युवकों का अाह्वान किया है ताकि वे उनके साथ कंधे-से-कंधे मिलाकर बाढ़ में फंसे लोगों को बचाएँ।

हमारे विद्यालय ने इस कठिन घड़ी में उड़ीसा के लोगों की सहायता करने का निश्चय किया है। उन्होंने सहायता दल के लिए साहसी युवकों को एकत्र करना आरंभ कर दिया है। मैंने भी इस दल में जाने का निर्णय लिया है। परन्तु आपके सहयोग के बिना में यह कदम नहीं उठा सकता हूँ।

अत: इस नेक कार्य के लिए मैं आपकी अनुमति चाहता हूँ। आपकी अनुमति मेरे लिए बहुत आवश्यक है। आपकी अनुमति कई लोगों को कठिनाई से निकाल सकती है और मेरा मनोबल भी बढ़ाएगी। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप इस अच्छे कार्य के लिए मुझे अनुमति अवश्य देंगे।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
योगराज

पर्वतारोहण प्रशिक्षण के लिए पिता द्वारा मना किए जाने पर पिताजी को समझाते हुए पत्र लिखिए।

ए.सी.-4,

पालिका विहार,

नई दिल्ली

तिथि: ....

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम!

आपके द्वारा भेजा गया पत्र मुझे आज ही प्राप्त हुआ है। घर के विषय में कुशलमंगल जानकर मेरा हृदय प्रसन्नचित हो गया। परन्तु मेरे द्वारा दार्जिलिंग में स्थित पर्वतारोहण-संस्थान से प्रशिक्षण करने में आपकी स्वीकृति न पाकर बहुत दुःख भी हुआ। पिताजी यह प्रशिक्षण में मौज़-मस्ती के लिए नहीं कर रहा हूँ, इसको करने के पीछे मेरा विशेष उद्देश्य है। इस प्रशिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों के अंदर शारीरिक बल व आत्मबल को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। विपरीत परिस्थितियों में स्वयं को कैसे संभाला जाए, इस प्रशिक्षण से उस क्षमता का भी विकास किया जाता है और विद्यार्थी के गुणों का विकास करने में इससे सहायता मिलती है। वह निडर और साहसी बनता है।

यह प्रशिक्षण मेरे आत्मबल को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आगे चलकर यदि मैं सेना में अपना भविष्य तलाशता हूँ, तो यह प्रशिक्षण मुझे उचित दिशा भी प्रदान कर सकता है। इस प्रशिक्षण को करने हेतु मेरी पूरी कक्षा जा रही है। सिर्फ में ही हूँ, जिसको अनुमति प्राप्त नहीं हुई है।

इसलिए आपसे मेरा सविनय निवेदन यह है कि मेरी मनोस्थिति को समझकर मुझे प्रशिक्षण करने की अनुमति प्रदान करें। माता जी को सादर प्रणाम, राधा को प्यार। आपके पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

आपका आज्ञाकारी बेटा,

अमित

मित्र को दसवीं कक्षा में सभी विषयों में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर बधाई पत्र लिखिए।

पटेल नगर,

देहरादून।

तिथि: ....

प्रिय सखी कला,

प्यार!

आशा करती हूँ तुम व तुम्हारा परिवार वहाँ कुशलमंगल होगा। यहाँ भी सब कुशलमंगल है। जबसे मुझे यह शुभ समाचार प्राप्त हुआ है कि तुमने पूरी दिल्ली में हर विषयों में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं, मुझे बहुत

प्रसन्नता हुई है। तुमसे इसी प्रकार की आशा थी। तुमने अपने माता-पिता का सर गर्व से ऊँचा कर दिया है। मेरे माता-पिता और मेरी तरफ से तुम्हारी इस सफलता के लिए तुम्हें बहुत-बहुत बधाई।

अपनी खुशी को व्यक्त करने के लिए तुम्हें बधाई पत्र लिखने से स्वयं को रोक नहीं पाई। तुमने दसवीं की पढ़ाई में सफलता पाने के लिए कठिन साधना की थी। भगवान ने तुम्हें उसका फल दे दिया है। तुमने यह सिद्ध कर दिया कि परिश्रमी को उसके परिश्रम का फल अवश्य मिलता है। मैं सबको तुम्हारे समान परिश्रम करने की सीख देती हूँ। तुम्हारी इस सफलता से तुम्हारे माता-पिता को बहुत प्रसन्नता हुई होगी।

आशा करती हूँ इसी तरह आगे भी परिश्रम करते हुए, तुम इसी तरह जीवन में अपार सफलता प्राप्त करोगी। अपनी इस सखी की ओर से एक बार फिर बधाई स्वीकार करना और पत्र अवश्य लिखना। परिवार में बड़ों को चरण-स्पर्श (नमस्कार) व छोटों को प्यार कहना।

तुम्हारी सखी,

अरूणा

पत्र लेखन का महत्त्व एवं लाभ बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

ए-103, वैशाली,

गाज़ियाबाद

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

स्नेह!

बहुत समय से तुम्हारा पत्र नहीं आया था। अत: तुम्हारा हाल-समाचार जानने के लिए तुम्हें पत्र लिखा। तुम आजकल पत्र बहुत ही कम लिखते हो। फ़ोन पर ही कभी-कभी बात होती है। आजकल एस.एम.एस. भी काफ़ी प्रचिलित हो गया है। दो लाईन लिखी और समाचार दे दिया। परन्तु एस.एम.एस. दिल के भावों को स्पष्ट रूप से बताने में असमर्थ है। इसी तरह कंप्यूटर के आने से ई-मेल का चलन भी बढ़ गया है। जब मर्ज़ी किया मेल में हाल-समाचार लिख दिया। परन्तु इसके लिए घर में कंप्यूटर व इंटरनेट का होना आवश्यक है। हर मध्यम परिवार के घर में यह हो ज़रूरी नहीं है।

मेरे अनुसार पत्र लेखन से इनका कोई मुकाबला नहीं है। पत्र का इंतज़ार करने का आनंद, पत्र मिलने पर उसको विस्तार से पढ़ना, फिर अलमारी में रख देना और याद आई तो फिर पत्र निकालना और दोबारा, तिबारा पढ़ना एक अलग ही अनुभव है। यह आनंद फोन काल, एस.एम.एस. और ई-मेल से नहीं मिल सकता। एक लंबे समय के बाद पत्र मिलना और पत्र मिलने की प्रतीक्षा इत्यादि सब अनोखी बातें हैं।

इस पत्र का उत्तर तुम मुझे पत्र लिखकर ही करना और विस्तार से सबके बारे में लिखना। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना तथा चीनू को प्यार देना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

अपूर्व

अपने मित्र के पिताजी की असामयिक मृत्यु पर एक संवेदना पत्र लिखिए।

बाल भवन,

उदयपुर।

दिनांक: ....

प्रिय अनुपम,

सादर स्नेह!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुम्हारे पिताजी की अकस्मात मृत्यु की ख़बर पढ़कर अत्यंत दुख हुआ। तुम घर में सबसे बड़े हो सो धैर्य के साथ अपने परिवार के सदस्यों को संभालना तुम्हारी ज़िम्मेदारी बनती है। आगे घर भी तुम्हें ही संभालना है। मृत्यु के आगे किसी का भी वश नहीं चलता है। यह सब ईश्वर की इच्छानुसार होता है। हम सब तो कठपुतली के समान हैं। जिसने यह दुख दिया है, वही तुम्हें इस दुख से उभरने की शक्ति देगा।

हर व्यक्ति जो इस संसार में आया है, उसको एक समय तो जाना ही पड़ता है। कुछ लोग जल्दी या कुछ लोग देर से जाते हैं। तुम्हारे जीवन में उनका स्थान भरा नहीं जा सकता है। यह दुख बहुत बड़ा है। परन्तु मित्र इस दुख को भुलाकर तुम्हें अपना जीवन नए सिरे से शुरु करना है। बड़ों की तरह घर के सभी कामकाज को तुम्हें ही करना पड़ेगा एवं समस्याओं को बुद्धिमत्ता से सुलझाना पड़ेगा।

आगे तुम समझदार हो। माताजी एवं बहन को इस दुखद परिस्थिति में धैर्य देना। मैं छुट्टियों में आकर तुमसे मिलूँगा। सभी बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को प्यार देना।

तुम्हारा मित्र,

नरेन्द्र नाथ

ग्रीष्मावकाश में पर्वतीय प्रदेश में हुए अनुभव को बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

101/ब/गणेश नगर,

दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

मधुर स्नेह!

अब की गर्मियों की छुट्टियाँ बहुत ही अच्छी बीती क्योंकि इस बार में गर्मियों की छुट्टियों में मसूरी गया हुआ था। मेरी बहुत दिनों से पर्वतीय प्रदेश घूमने की इच्छा बनी हुई थी। परन्तु समय और साथ दोनों ही नहीं थे। इस बार पिताजी ने परिवार के साथ मसूरी घूमने का कार्यक्रम बनाया। मसूरी में ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, घनी हरियाली, ऊँचे-ऊँचे पर्वत, झरने, घाटियों में गूँजती आवाज़ें सभी कुछ इतना सुंदर और अद्‌भुत था कि अब तक उसे भूल नहीं पाया हूँ। दिल्ली की भयंकर गर्मियों से वहाँ जाकर विशेष राहत मिली। वहाँ का मौसम बहुत सुहाना और अच्छा था।

मैं वहाँ के कैम्टी फाल, कंपनी गार्डन, लाल टिब्बा, मॉल रोड़ आदि स्थानों में घूमने गया था। वहाँ की चहल-पहल और शोभा देखते ही बनती थी। मॉल रोड़ में मैंने परिवार के साथ बहुत खरीदारी की और बड़ी मौज़-मस्ती भी की थी। यह एक सप्ताह कितने मज़े में निकला, कहते नहीं बनता। यह यात्रा मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा।

हम दोनों अगले वर्ष मसूरी साथ-साथ घूमने अवश्य जाएंगे। पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को मेरा नमस्कार कहना। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा, पत्र अवश्य लिखना।

तुम्हारा मित्र,

अ.ब.स

मित्र द्वारा दर्शनीय स्थलों की सैर करवाने पर उसका आभार व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

43/2, रोहतास नगर,

नई दिल्ली-110092

दिनांक: ....

प्रिय मित्र,

मधुर स्नेह!

इस बार की गर्मियों की छुट्टियाँ तुम्हारे कारण यादगार बन गई हैं। यह वह अनुभव है जो मेरे मन में सदैव मीठी याद के रूप में रहेगा। मेरे मन में पर्वतीय प्रदेश घूमने की बहुत इच्छा थी पर कभी किसी को कह

नहीं पाया। तुम्हारे निमंत्रण ने मेरे मन की इस इच्छा को पूरा कर दिया। इसका आभार मैं किन शब्दों में करूँ समझ नहीं आ रहा है।

तुम्हारे साथ शिमला का यह सफ़र बहुत आनंदमय था। तुम्हारी नानी के घर में रहने का अनुभव निराला था। प्रात:काल खिड़की से पर्वत प्रदेश की शोभा देखकर मन प्रसन्न हो जाता था। वहाँ का स्वच्छ वातावरण, प्रकृति सुंदरता, शांत व पहाड़ी जीवन मन को मुग्ध कर देता था। ऐसा लगता था मानो मनुष्य जिस स्वर्ग की कल्पना करता है, वह यहीं है। तुमने शिमला में मुझे मॉल रोड़ बाज़ार, चर्च, जाखू मंदिर, समर हिल चौक इत्यादि दिखाए। वहाँ की चहल-पहल में मज़ा आ गया था। तुम्हारे साथ दो हफ़्ते कैसे गुज़रे पता ही नहीं चला।

मैं तुम्हारा अत्यंत आभारी रहूँगा कि जहाँ तुमने मुझे प्राकृतिक सुंदरता से समन्वय कराया, वहीं शिमला की संस्कृति व जन-जीवन से भी मेरे परिचय कराया। यह यात्रा मैं कभी भूल नहीं पाऊँगा। अपने माता-पिता को मेरा नमस्कार कहना। पत्र अवश्य लिखना।

धन्यवाद सहित,

तुम्हारा मित्र

अ.ब.स

अपने जन्मदिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखिए।

40/50, सरिता विहार,

गुड़गाँव।

दिनांक: ....

प्रिय कवित्त,

सप्रेम नमस्कार!

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र लिखना चाह रहा था। परन्तु परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त होने के कारण लिख नहीं पाया। तुम्हारा भेजा पार्सल कल ही प्राप्त हुआ है। उसे देखकर में चकित रह गया। तुम्हें अब भी मेरा जन्मदिन याद है, यह सोचकर दिल भर आया। यह उपहार मेरे लिए अमूल्य है। तुम्हारे द्वारा भेजी गई रविन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों की पुस्तक मिली। वह बहुत ही अच्छी और शिक्षाप्रद है।

रविन्द्रनाथ टैगोर भारत के महान व्यक्तियों में से एक हैं। इनके द्वारा लिखित कहानियों का संग्रह अभूतपूर्व है। इसमें जो कहानियाँ हैं, वे बहुत प्रेरणादायक और आनंददायक भी हैं। ये कहानियाँ साहित्य की दृष्टि से भी मूल्यवान हैं। इन कहानियों में उस समय के सामाजिक जन-जीवन व संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। मैं बहुत समय से इसी पुस्तक की तलाश में था परन्तु हर बार मुझे निराशा हाथ लगी।

माता-पिताजी को भी तुम्हारा भेजा उपहार पसंद आया। तुमने मेरी रुचि को जानते हुए उपहार भेजा, उसके लिए धन्यवाद कर रहा हूँ। घर पर सभी को मेरा नमस्ते कहना तथा छोटे भाई को प्यार।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

क.ख.ग

विद्यालय में वृक्षारोपण समारोह के आयोजन का अनुभव बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

4/37, जाम नगर,

गुजरात।

दिनांक: ....

प्यारे मित्र अविनाश,

सप्रेम!

पिछले सप्ताह हमारे विद्यालय में प्रधानाचार्य द्वारा वृक्षारोपण समारोह का आयोजन करवाया गया था। विद्यालय में पढ़ने वाले हर विद्यार्थी को अपने साथ एक पौधा लाने को कहा गया था। सभी विद्यार्थी इस समारोह के लिए बहुत उत्साहित थे। हम अपनी पंसद से पौधा चुनकर विद्यालय ले गए थे। इस प्रकार उस दिन विद्यालय में 1200 पौधे एकत्रित हुए।

विद्यालय में प्रधानाचार्य जी ने समारोह का संचालन स्वयं किया। इस समारोह में विद्यार्थियों से लेकर अध्यापक-अध्यापिकाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रधानाचार्य ने अपने भाषण से समारोह का आरंभ किया।

उन्होंने पेड़ों के महत्व का वर्णन करते हुए, सभी को वर्ष में एक पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया। सबसे पहला पौधा प्रधानाचार्य जी ने लगाया। वह अपने साथ आम का पौधा लेकर आईं थीं। उसके बाद सबने पौधा लगाना आरंभ किया। देखते ही देखते हमारे विद्यालय की खाली जमीन पौधों से भर गई। हम सब ने मिलकर अपने-अपने पौधों में खाद व पानी डाला।

अपने लगाए पौधों को देखकर सभी बच्चे हर्ष से उछल पड़े। प्रधानाचार्य ने इसके बाद सभी बच्चों को उनके इस कार्य में दिए गए योगदान के लिए धन्यवाद कहा। यह दिन मेरे लिए सदा यादगार रहेगा।

पत्र समाप्त करता हूँ। घर में सभी बड़ों को नमस्कार कहना।

तुम्हारा मित्र,

भरत

नए विद्यालय में पहले दिन के अनुभव को बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

मकान नम्बर-51/5,

सेक्टर-16, नोयडा।

दिनांक: ....

प्यारे मित्र पकंज,

बहुत प्यार!

आज ही तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा हालचाल मालूम हुआ। मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आज मेरा कक्षा में पहला दिन था। कक्षा में जाने से पहले मैं बहुत घबराया हुआ था। मन में तरह-तरह के प्रश्न उठ रहे थे कि वहाँ का वातावरण कैसा होगा, मेरे साथ पढ़ने वाले सहपाठी कैसे होगें और क्या मैं वहाँ सबके साथ तालमेल बिठा पाऊँगा इत्यादि। परन्तु मेरा यह डर बेकार साबित हुआ। वहाँ का वातावरण बहुत ही मित्रता पूर्ण था।

मैंने जब कक्षा में प्रवेश किया तो मेरी अध्यापिका ने सबसे मेरा परिचय कराया। मेरी कक्षा में 30 विद्यार्थी थे। सबने एक-एक करके मुझे अपना परिचय दिया। एक अमर नाम के विद्यार्थी ने मुझे अपने साथ बैठने का आग्रह किया। अध्यापिका के जाने के पश्चात सबने मुझसे बात की व मेरे साथ अपना लंच बांटकर खाया। उनके मिलनसार व्यवहार ने मेरे मन से सारी घबराहट दूर कर दी। मुझे एक पल के लिए भी ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि मैं इस विद्यालय में नया आया हूँ। सबके व्यवहार ने मुझे बहुत प्रसन्नता दी।

मित्र घर में सभी बड़ों को मेरा प्रणाम कहना, नेहा व दीपू को प्यार। तुम्हारे पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

राजीव

मित्र को कालेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रवेश पाने में मिली सफलता पर बधाई देने हेतु पत्र लिखिए।

वसुंधरा,

गाज़ियाबाद।

तिथि: ....

प्रिय मित्र अजित,

बहुत प्यार!

आशा करता हूँ, तुम व तुम्हारा परिवार वहाँ कुशलमंगल होगा। यहाँ भी सब कुशलमंगल हैं। जब से मुझे यह शुभ समाचार प्राप्त हुआ है कि तुम्हारा दाखिला दिल्ली कालेज ऑफ इंजीनियरिंग में हो गया है, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। तुम्हें इस सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई हो। तुम्हारी सफलता पर अंकल-आंटी को तुम पर बहुत गर्व हुआ होगा।

अपनी खुशी को व्यक्त करने के लिए मैं तुम्हें बधाई पत्र लिखने से स्वयं को रोक नहीं पाया। इस कालेज में प्रवेश पाना बहुत कठिन होता है। कितने ही छात्र प्रत्येक वर्ष इसमें प्रवेश पाने के लिए तैयारियाँ करते हैं। परन्तु सफल नहीं हो पाते। तुमने इस कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए बहुत कठिन साधना की थी। भगवान ने तुम्हें उसका फल दे दिया है। तुमने अपने अच्छे भविष्य के लिए जिन सपनों को देखा था, उसकी पहली सीढ़ी पर तुमने सफलतापूर्वक कदम रख दिया है।

आशा करता हूँ कि इसी तरह मेहनत करते हुए तुम इस अवसर का उचित लाभ उठाओगे और जीवन में अपार सफलता प्राप्त करोगे। अपने इस मित्र की ओर से एक बार फिर बधाई स्वीकार करना और पत्र अवश्य लिखना। परिवार में बड़ों को चरण-स्पर्श व छोटों को प्यार कहना।

तुम्हारा मित्र,

निखिल गुप्ता

आई.पी.एल. के एक मैच का आँखों देखा हाल मित्र को बताने हेतु पत्र लिखिए।

4/78, मोदी नगर,

नई दिल्ली।

प्रिय साधना,

बहुत प्रेम!

बहुत समय से तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया था इसलिए तुम्हें पत्र लिख रही हूँ। आशा करती हूँ कि घर में सब कुशलमंगल होगा। भगवान की कृपा से यहाँ भी सब कुशलमंगल है। आगे समाचार यह है कि कुछ दिनों पहले मुझे फ़िरोज़शाह कोटला स्टेडियम जाने का मौका प्राप्त हुआ। वहाँ पर टी-20 का एक मैच था। यह मैच डेयर डेविल्स और मुम्बई इंडियंस के बीच था। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था। दर्शक खिलाड़ियों की एक झलक पाने के लिए बैचेन थे।

चारों तरफ दर्शकों में उत्साह देखते ही बनता था। मैच नियत समय पर आरंभ हुआ। हर चौक्के और छक्के पर दर्शकों द्वारा खुब शोर मचाया जा रहा था। ऐसा लगता था मानो आदमियों का सैलाब उमड़ पड़ा हो। मैंने भी सबके साथ बहुत शोर मचाया। अपने पहले ही मैच में डेयर डेविल्स को मुम्बई इंडियंस के हाथों

आठ विकेट से करारी हार झेलनी प़डी थी। स्टेडियम में मैच देखने का यह मेरा पहला अनुभव था। इसमें मुझे बहुत आनंद प्राप्त हुआ।

तुम्हें अपने इस पहले अनुभव से अवगत कराना चाहती थी। अत: पत्र में तुम्हें इसका हाल-समाचार लिख रही हूँ। पत्र समाप्त करती हूँ। घर में सभी को मेरा प्रमाण कहना।

तुम्हारी सखी,

सुंगधा

वाद-विवाद-प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिलने पर समस्त विवरण बताने हेतु मित्र को पत्र लिखिए।

1432, शान्ति निकेतन,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्रिय विमल,

सप्रेम प्यार!

आशा करता हूँ कि तुम भगवान की कृपा से कुशलमंगल होगे। मैं भी यहाँ कुशलमंगल हूँ। आज तुम्हें पत्र लिखने का खास कारण है। मैं तुम्हारे साथ अपनी सफलता बाँटना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में वाद-विवाद प्रतियोगिता थी। इस प्रतियोगिता में मैंने भी अपना नाम दिया था।

हमारे विद्यालय में आयोजित इस प्रतियोगिता में विषय था "देश और हम", जिसमें विद्यार्थियों को आपस में वाद-विवाद करने को कहा गया। मैंने इस विषय पर सकारात्मक विचार प्रस्तुत किए। मेरे विपक्ष में बैठे प्रतिद्वंदी ने उसके विरोध में अपनी दलीलें दीं। परन्तु मेरा पक्ष इतना प्रभावशाली था कि उसकी दलीलें मेरे समक्ष कमज़ोर रही। मेरे विचार इतने सशक्त व प्रभावशाली थे कि सबके द्वारा मेरी सराहना की गई। मैंने इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।

प्रधानाचार्य द्वारा प्रथम पुरस्कार देते हुए सभी दर्शकों ने मेरा उत्साह तालियों से बढ़ाया। यह क्षण मेरे जीवन में अविस्मरणीय है। तुम्हें मेरी यह सफलता जानकर अति प्रसन्नता होगी कि तुम्हारे मित्र को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

तुम्हारा मित्र,

अनिमेष

विद्यालय में आपने सहकर्मी को हिन्दी सम्मेलन में मारीशस जाने पर शुभकामना पत्र लिखिए।

नवोदय विद्यालय,

हैदराबाद

दिनांक: ....

श्रीमान रमेश जी,

मुझे कल ही हमारी प्रधानाचार्य से पता चला कि आपका चयन मारीशस में होने वाले 'हिन्दी सम्मेलन' के लिए हुआ है। यह जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि आप विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए मारीशस की यात्रा पर जा रहे हैं। इस सम्मेलन में आप हमारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो कि अत्यंत सम्मानजनक बात है।

पूरे देशभर के विद्यालयों में से केवल आपका चयन हुआ है, यह जानकर गर्व से हमारा मस्तक ऊँचा हो गया है। इससे हमारे विद्यालय का नाम भी रौशन हुआ है। आप हिन्दी के अच्छे अध्यापक हैं, यह बात तो हम जानते ही थे। परन्तु आप एक अच्छे लेखक व कवि भी हैं, यह हमें कल ही पता चला। आप जैसे गुणी व विद्वान व्यक्ति के साथ मित्रता हमारे लिए सौभाग्य की बात है। आप अपने उद्देश्य में सफल हों, मेरी भगवान से यही प्रार्थना हैं। मेरी शुभकामनाएँ सदैव आपके साथ हैं। आपकी यात्रा मंगलमय हो।

भवदीय,

आशा रोहतगी

पड़ोसी द्वारा की गई सहायता के लिए धन्यवाद करने हेतु पत्र लिखिए।

789/प्रेम नगर,

नई दिल्ली।

दिनांक: ....

प्यारे अंकल,

सादर प्रणाम!

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखना चाह रहा था। परन्तु आपका पता नहीं होने के कारण लिख नहीं सका। आज ही आपका पता प्राप्त हुआ है। अत: आपको पत्र के माध्यम से धन्यवाद करना चाहता हूँ।

अंकल, मैं आपको कभी भूल नहीं सकता। आपके कारण ही आज मैं सही सलामत अपने माता-पिता के साथ हूँ। उस दिन जब मैं विद्यालय से घर आ रहा था। कुछ गुंड़े से दिखने वाले लड़कों ने मुझे मारना आरंभ कर दिया था। वह मुझसे मेरी घड़ी लेना चाहते थे।

मेरे नहीं देने पर वह मुझे मारने लगे। आप वहाँ से गुज़र रहे थे। आपको स्थिति समझते देर नहीं लगी और आपने बिना वक्त गंवाए, वहाँ आकर मुझे उनसे बचा लिया। इसके साथ ही आपने मुझे सकुशल घर पहुँचाया।

उस समय मैं इतना घबरा गया था कि आपका धन्यवाद नहीं कर पाया। आप जैसे व्यक्ति आजकल बहुत कम देखने को मिलते हैं। आपके साथ अब मेरा इंसानियत का रिश्ता जुड़ गया है। अंकल, मैं जितना भी आपका धन्यवाद करूँ कम है। आप उस समय मेरे लिए ईश्वर के समान थे। एक बार फिर में आपका दिल से धन्यवाद करता हूँ।

धन्यवाद

अमिताभ

खोई वस्तु लौटाने पर अपरिचित को एक पत्र लिखिए।

7/14, रचना, वैशाली,

गाज़ियाबाद।

दिनांक: ....

आदरणीय रमेश चन्द जी,

नमस्कार!

मेरा नाम अशोक है। मैं वही व्यक्ति हूँ, जिसका बैग आपने वापस लौटा दिया था। मेरी आपसे कोई मुलाकात नहीं हुई है। परंतु अब आपके साथ घनिष्ट संबंध जुड़ गया है। आप बड़े ही भले एवं सच्चे इंसान हैं। आज के युग में जहाँ भाई-भाई को लूटने को तैयार रहता है। आपने पराए होते हुए भी अपनों से बढ़कर कार्य किया है।

मैं उस दिन की घटना नहीं भूल सकता जब मैं अपना बैग रेलगाड़ी में भूल गया था। उसमें मेरी हस्ताक्षर की हुई चैकबुक रखी हुई थी। जब मुझे अपनी भूल का ज्ञान हुआ तब तक रेलगाड़ी जा चुकी थी। चैकबुक के विषय में सोचते ही मेरी जान सुख गई थी। मैं उस समय अपने आपको असहाय महसूस कर रहा था।

घर पहुँचकर मुझे पता चला कि आप मेरा बैग घर पर दे आए हो और उसमें मेरी चैकबुक वैसी की वैसी रखी हुई है। आज के ज़माने में इतना ज़िम्मेदार व्यक्ति कहीं नहीं मिलता है। आपके इस कार्य के लिए मैं सदैव आपका आभारी रहूँगा। आपकी इस सहायता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

भविष्य में, मैं आपके किसी भी काम आ सकूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मुझे अवश्य याद कीजिएगा।

एक बार फिर से मैं आपका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

भवदीय,

अशोक